संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसका वाङ्गमय भारतीय संस्कृति के सभी अंगों की प्रामाणिक एवं व्यापक अभिव्यक्ति करता है। इस भाषा एवं साहित्य के ऐतिहासिक महत्त्व का अनुभव करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत कालेज (महाविद्यालय) की स्थापना सन् १९१८ में हुई थी। बाद में इसी का नामान्तर प्राच्यविद्या धर्मविज्ञान संकाय हुआ। वर्तमान में यह संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय के नाम से सुविख्यात है।

यह संकाय मुख्य रूप से प्राचीन शास्त्रों, संस्कृत भाषा और साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित है साथ ही इसका एक अन्य प्रयोजन पूर्व और पश्चिम में सार्थक संवाद स्थापित करना है।

यह संकाय अपनी प्रकृति में विलक्षण है। इसमें शास्त्रीय ग्रंथों का शब्दशः अध्ययन-अध्यापन प्राचीन पद्धति के अनुसार होता है। इसमें छात्रों का मौखिक और लिखित-उभयविध परीक्षण किया जाता है। इस संकाय को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के व्यापक परिवेश में आधुनिक चिंतन, विज्ञान और तकनीक से संवाद स्थापित करने का विशिष्ट अवसर प्राप्त है, क्योंकि इस प्रकार का व्यापक परिवेश भारत के अन्य किसी भी संस्थान में दुर्लभ है।

वर्तमान में इस संकाय के अन्तर्गत कुल आठ विभाग कार्यरत हैं- **वेद विभाग, व्याकरण विभाग, साहित्य विभाग, ज्योतिष विभाग, वैदिक दर्शन विभाग, जैनबौद्ध दर्शन विभाग, धर्मशास्त्र मीमांसा विभाग एवं धर्मागम विभाग।** इन विभागों में लगभग २३ विषयों का शिक्षण होता है तथा त्रिवर्षीय शास्त्री सम्मान और द्विवर्षीय (षाण्मासिक परीक्षा विधि से) आचार्य उपाधियाँ दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त सभी विषयों में उच्चकोटि के अनुसंधान की सुविधा भी उपलब्ध है जिसके माध्यम से विद्यावारिधि की उपाधि दी जाती है। इन पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त धर्मागम विभाग के अन्तर्गत एकवर्षीय संस्कृत प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम तथा द्विवर्षीय 'डिप्लोमा इन शैवागम' पाठ्यक्रम भी संचालित होते हैं। इन पाठ्यक्रमों का भारतीय और विदेशी - सभी छात्र समान रूप से लाभ लेते हैं। वेद और ज्योतिष विभाग क्रमशः कर्मकाण्ड में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम और ज्योतिष तथा वास्तुशास्त्र में द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। शोध सहित सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोधार्थियों के लिए छात्रवृत्ति एवं छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। संकाय का अपना स्वतंत्र पुस्तकालय है, जिसमें लगभग २५ हजार सामान्य और दुर्लभ पुस्तकें एवं पाण्डुलिपियों का संग्रह है। यह ग्रंथालय भारतीय एवं विदेशी जिज्ञासुओं को अपनी सेवाएं प्रदान करता है। शिक्षकों एवं छात्रों के अनुसंधानपरक गंभीर लेखों के प्रकाशनार्थ 'संस्कृतविद्या' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन भी यह संकाय करता है। प्रकाशन की गतिविधियाँ संकाय के प्रकाशन अनुभाग के माध्यम से संचालित होती हैं। संकाय का **पंचांग अनुभाग** सन् १९२६ से नियमित रूप से **विश्वपंचांग** का प्रकाशन कर रहा है।